सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का पंचम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षी कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'सत्य युग में प्रारम्भ की तिथी-अक्षय तृतीया' लेख में अक्षय तृतीया पर्व से जुड़े हुए विविध राष्ट्रीय एवं लोकजीवन के पहलुओं को बतला कर उसके धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'सवाई प्रतापसिंह का काव्य वैभव' शीर्षक शोधलेख में जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह की कृष्ण भक्ति एवं तद्विषयक काव्य रचनाओं का वैशिष्ट्य प्रतिपादित किया गया है। डॉ. सुरेश कुमार शर्मा द्वारा लिखित 'औषध अनुपान की उपादेयता' शोधलेख में आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में अनुपान की उपयोगिता एवं उसके विविध प्रकारों एवं उपयोगों की जानकारी प्रस्तुत की गयी है। तत्पश्चात् प्रो. (डॉ.) सरोज कौशल द्वारा लिखित 'पौराणिक सृष्टिप्रक्रिया' शोधलेख में सृष्टिप्रक्रिया की परम्परा तथा विविध सर्ग रचनाओं की आनुक्रमिक जानकारी प्रदान की गयी है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा